

Natural Water Cycle - Answer To A Question

Look, you've come up with a very good idea. We've already been working on this and educating people about it.

Regarding water: every drop of water Allah has sent to Earth is preserved. None of it is wasted. It exists in different forms—liquid, gas, vapor, salty water, fresh water, ice, or snow. Water simply changes from one form to another.

What happened is that when we began industrial agriculture, a hard layer formed beneath the soil—called a “hardpan.” This pan typically starts around 7–8 inches and extends up to 18–20 inches deep. It's a compact layer that allows neither air penetration nor water absorption or infiltration.

As a result, we only use the top 5–6 inches of soil by tilling it. The soil beneath is disconnected by the industrial agriculture systems. When water is applied, it only saturates the top layers. Air escapes, which leads to plant issues—since plants need both moisture and aeration.

When air escapes:

- Microbial communities die.
- Anaerobic conditions emerge.
- Harmful enzymes and bacteria flourish, damaging plants.

In PQNK the Pristine Organic farming system, the first step is to break the hardpan. Once broken, rainfall is absorbed into the soil—it doesn't run off or evaporate, but remains stored in the field.

Over the past 30–40 years, groundwater levels have plummeted from 20–30 feet to over 250–300 feet. We pumped out water, but due to hardpan, it didn't recharge the aquifers.

As a result, trillions of tons of extra water are now floating in the atmosphere as vapor and gas, severely disturbing the climate. Bare soil heated up to over 70°C. When hot air rose, it pushed cooler layers outwards, altering weather patterns. Cold regions saw increased rain, snowfall, hurricanes, and erratic seasons.

The key benefits of PQNK system:

1. All rainfall is absorbed into the soil.
2. Mulch prevents evaporation.
3. Only the necessary amount of water is used.

This reduces irrigation needs by 80–90%, and in many cases, eliminates the need altogether.

Allah has created a natural irrigation system through rain, dew, and humidity—without prevailing irrigation methods.

Plants require moist soil, not excessive water. Water acts merely as a carrier to dissolve and transport minerals through osmosis, and it's absorbed via fine hair-like roots in tiny quantities.

This is a significant subject with long-term benefits. Reflect on it. If you have any questions, feel free to ask.

پانی کا قدرتی نظام

اب دیکھیں، پچھلے 30-40 سالوں میں جہاں پانی 20-30 فٹ پہ تھا، وہاں اب وہ 250-300 فٹ نیچے جا چکا ہے، کیونکہ ہم نے پانی پمپ کیا لیکن زمین ری چارج نہ ہو سکی۔ کیونکہ بارڈ پین تھا، اور پانی نیچے جا ہی نہیں سکا۔

اسی وجہ سے فضا میں ٹریلینز آف ٹن پانی ویپر اور گیس کی صورت میں فلوٹ کر رہا ہے، جس سے ماحولیاتی بگاڑ پیدا ہوا۔ جب زمین نکلی چھوڑ دی گئی، تو ریڈی ایشن کی وجہ سے اس کا درجہ حرارت 60 سینٹی گریڈ سے اوپر چلا گیا۔ پھر جب گرم ہوا بلند ہوئی، تو اُس نے ٹھنڈی ہوا کو دھکیل کر شمالی علاقوں میں بارشوں اور برفباری کی شدت بڑھا دی، جس سے طوفان، برف، اور موسم کی شدت میں اضافہ ہوا۔

پکٹنے کا سب سے بڑا فائدہ یہ ہے کہ:

1. بارش کا سارا پانی زمین میں جذب ہو جاتا ہے۔

2. اوپر ملنے کی وجہ سے پانی ایوپریٹ نہیں ہوتا۔

3. جتنا پانی پودے کو درکار ہوتا ہے، اتنا ہی استعمال ہوتا ہے۔

اس سے 80-90 فیصد پانی کی ضرورت کم ہو جاتی ہے، اور بعض جگہوں پر تو بالکل بھی آبپاشی کی ضرورت نہیں پڑتی۔

اللہ تعالیٰ نے خود ہی نظام بنایا ہے۔ بارش، اوس، نمی۔ یہی نیچرل ایریگیشن سسٹم ہے۔

پودے کو صرف موٹس سائل چاہیے ہوتا ہے، پانی صرف کیریئر ہوتا ہے جو حل شدہ نمکیات کو اوپر لے کر جاتا ہے، اور یہی پانی ہیرلائن روٹس سے جذب ہوتا ہے، جو مقدار میں نہایت قلیل ہوتا ہے۔

یہ ایک اہم موضوع ہے جس کے فوائد طویل المدت ہیں، اس پر غور کریں۔ اگر کوئی سوال ہو تو ضرور پوچھیں۔

شکریہ۔

دیکھیں، آپ کے ذہن میں بہت اچھی تجویز آتی ہے۔ اس پر پہلے بھی ہم کام کر رہے ہیں اور لوگوں کو اس بارے میں آگاہ کر رہے ہیں۔

پانی کے بارے میں دیکھیں، اللہ تعالیٰ نے زمین پر جتنا پانی بھینکا ہے، اُس کا ایک ایک قطرہ محفوظ ہے۔ وہ کہیں بھی ضائع نہیں ہوا۔ وہ یا تو لیکونڈ فارم میں ہے، یا گیس، یا ویپر، یا سالٹس واٹر، یا سویٹ واٹر کی شکل میں ہے، یا برف اور سنو میں ہے۔ یعنی پانی صرف ایک شکل سے دوسری شکل میں تبدیل ہوتا رہتا ہے۔ ہوا یہ ہے کہ جب ہم نے انڈسٹریلائزیشن اور فیکٹریاں شروع کیں، تو اس سے زمین کے نیچے ایک سخت تہہ بن گئی جسے ہم "ہارڈ پین" کہتے ہیں۔ یہ تہہ عام طور پر 7-8 انچ سے لے کر 18-20 انچ تک کی ہو سکتی ہے۔ یہ ایک ایسی تہہ ہے جس میں نہ ہوا جاتی ہے، نہ پانی جذب ہوتا ہے، اور نہ پانی نیچے جا سکتا ہے۔

لہذا اوپر کی صرف 5-6 انچ کی سطح کو ہم نرم کر کے استعمال کر رہے ہیں، جبکہ نیچے والی زمین ہمارے ایگری کلچر سسٹم سے کٹ چکی ہے۔ جب ہم پانی لگاتے ہیں، تو وہ صرف اوپر والی سطح میں جذب ہوتا ہے۔ وہ جلدی سیجوریٹ ہو جاتی ہے، ہوا نکل جاتی ہے، جس کی وجہ سے پودے کو مسائل پیش آتے ہیں کیونکہ اسے نمی کے ساتھ ساتھ ایریشن بھی چاہیے۔

جب ایریشن نکل جاتی ہے، تو ایک تو مائیکرو ہزمر جاتے ہیں، دوسرا انروپک کنڈیشنز پیدا ہو جاتی ہیں، جہاں نقصان دہ انزائمز بنتے ہیں جو پودے کو نقصان پہنچاتے ہیں۔

اب جب ہم پکٹنے (یعنی ری جنریٹو فارمنگ یا PQNK) کی طرف شفٹ کرتے ہیں، تو ہمارا پہلا قدم یہ ہوتا ہے کہ ہارڈ پین کو توڑا جائے۔ جب یہ ٹوٹ جاتا ہے، تو بارش کا سارا پانی زمین میں جذب ہو جاتا ہے، رن آف نہیں بنتا، اور نہ ہی ایوپریٹ ہوتا ہے۔

शीर्षक: प्राकृतिक जल चक्र - एक प्रश्न का उत्तर

शीर्षक: प्राकृतिक जल चक्र - एक प्रश्न का उत्तर

विषयवस्तु:

देखिए, आपने एक बहुत अच्छा विचार प्रस्तुत किया है। हम पहले से ही इस पर कार्य कर रहे हैं और लोगों को इसके बारे में जागरूक कर रहे हैं।

पानी के संदर्भ में: अल्लाह तआला ने पृथ्वी पर जितनी भी पानी की बूंदें भेजी हैं, वे सभी सुरक्षित हैं। इनमें से कोई भी बर्बाद नहीं होती। ये विभिन्न रूपों में मौजूद हैं—तरल, गैस, वाष्प, खारा पानी, मीठा पानी, बर्फ या ओले के रूप में। पानी बस एक रूप से दूसरे रूप में बदलता रहता है।

जब हमने औद्योगिक कृषि शुरू की, तो मिट्टी के नीचे एक कठोर परत बन गई—जिसे “हार्डपैन” कहते हैं। यह परत आमतौर पर 7–8 इंच से शुरू होकर 18–20 इंच तक गहराई में जाती है। यह एक सघन परत होती है जो न तो हवा को अंदर जाने देती है, न पानी को अवशोषित होने देती है और न ही नीचे जाने देती है।

इसका परिणाम यह होता है कि हम केवल ऊपर की 5–6 इंच की मिट्टी को जोतकर उपयोग करते हैं। नीचे की मिट्टी औद्योगिक कृषि प्रणालियों द्वारा कट गई होती है। जब हम पानी देते हैं, तो वह केवल ऊपर की परत में ही समा पाता है। हवा बाहर निकल जाती है, जिससे पौधों को समस्याएं होती हैं क्योंकि उन्हें नमी और हवा दोनों की आवश्यकता होती है।

जब हवा निकल जाती है:

- सूक्ष्मजीव मर जाते हैं।
- बिना हवा के स्थितियाँ (ऐनरोबिक कंडीशन्स) बन जाती हैं।
- हानिकारक एंजाइम और बैक्टीरिया उत्पन्न होते हैं जो पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं।

PQNK (प्रिस्टिन ऑर्गेनिक फार्मिंग सिस्टम) में पहला कदम हार्डपैन को तोड़ना होता है। एक बार यह टूट जाए, तो वर्षा का पानी मिट्टी में समा जाता है—ना वह बहता है, ना ही वाष्प बनकर उड़ता है, बल्कि खेत में ही संरक्षित रहता है।

पिछले 30–40 वर्षों में भूजल स्तर 20–30 फीट से गिरकर 250–300 फीट तक चला गया है। हमने तो पानी निकाल लिया, लेकिन हार्डपैन के कारण वह वापस ज़मीन में नहीं समा पाया।

परिणामस्वरूप, खरबों टन अतिरिक्त पानी अब वाष्प और गैस के रूप में वातावरण में तैर रहा है, जिससे जलवायु बुरी तरह से प्रभावित हुई है। खुली मिट्टी का तापमान 70°C से भी ऊपर चला गया। जब गर्म हवा ऊपर उठी, तो उसने ठंडी वायुमंडलीय परतों को धकेल दिया, जिससे मौसम का संतुलन बिगड़ गया। ठंडे क्षेत्रों में वर्षा, हिमपात, तूफान और असामान्य मौसम की घटनाएं बढ़ गईं।

PQNK प्रणाली के मुख्य लाभ:

1. वर्षा का सारा पानी मिट्टी में समा जाता है।
2. मल्व वाष्पीकरण को रोकता है।
3. केवल उतना ही पानी उपयोग होता है जितना पौधों को आवश्यकता हो।

इससे सिंचाई की ज़रूरत 80–90% तक कम हो जाती है, और कई मामलों में पूरी तरह समाप्त हो जाती है।

अल्लाह ने वर्षा, ओस और वातावरण की नमी के माध्यम से एक प्राकृतिक सिंचाई प्रणाली बनाई है—जो मानव निर्मित सिंचाई प्रणालियों से कहीं बेहतर है।

पौधों को अधिक पानी नहीं, बल्कि नम मिट्टी की ज़रूरत होती है। पानी केवल एक माध्यम